वैश्वीकरण : मीडिया और हिन्दी

सरला कुमारी

शोधार्थ- राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

सारांश :-आज हिन्दी की महती भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। हिन्दी भाषा ने एक ओर कम्प्यूटर, तार, इलेक्ट्रॉनिक, टेलिप्रिंटर, दूरदर्शन, रेडियों, अखबार और विज्ञापन आदि ने विश्वस्तर पर क्रान्ति ला दी है तो दूसरी ओर हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की राज्यभाषा व सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा के रूप में उभरी है। यह भाषा मीडिया के दौर में भी अपनी पहचान बनाने में सक्षम रही है। आज वैश्वीकरण के दौर में भी यह उभर कर सामने आयी । मीडिया भी हिन्दी का खूब प्रयोग कर रहा है। इस अंग्रेजी के दौर में भी हिन्दी अहम भूमिका निभा रही है।

वर्तमान समय अत्यंत प्रतिस्पर्धा का युग है। प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा इतनी बढ़ गई है कि हमें यह सोचना पड़ता है कि क्या उचित है एवं अनुचित। इसने हमारी भाषा को भी काफी प्रभावित किया है क्योंकि भा ा ही वह माध्यम है जो कला, संगीत जैसे अमूर्त विषय को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। मात्र व्याकरण के ज्ञान से किसी भाषा की पूरी व्याख्या संभव नहीं है। भाषा व व्याकरण का ज्ञान ही जीवन के विभिन्न पहलुओं के स्टीक व व्यापक अनुभव से व्यक्ति जितना समृद्ध होगा उसकी भाषा की अभिव्यंजना में उतनी ही धार, गहराई एवं व्यापकता होगी। किन्तु अब समय शार्ट कट का भी है। सूचना क्रान्ति के इस युग में अनेक संचार के साधन आने से भाषा के क्षेत्र में क्रान्ति आ गई है। अनेक संचार माध्यमों में हिन्दी भाषा का बेहतर प्रयोग हो रहा है जिनमें तार, टेलीफोन, चलभाष, सिनेमा, रेडियो, टेलीविजन, ऑडियो-विडियों, कम्प्यूटर, ए.टी.एम. मशीन, एजुसैट, फैक्स, ई-मेल, इंटरनेट इत्यादि प्रमुख हैं। इनके कारण आज हिन्दी वैश्विक भाषा बनने की ओर अग्रसर है। वर्तमान 21वीं सदी में इन संसाधनों के प्रयोग से हमारी भाषा विश्व में पहचान बना रही है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा वह अपने विचारों का आदान-प्रदान भाषा के माध्यम से करता है। वर्तमान में हिन्दी भाषा केवल विचारों एवं भावों को व्यक्त करने का साधन मात्र नहीं है बल्कि साहित्य, रेडियो, टेलीविजन, भारतीय थियेटर व सिनेमा तथा समाचार पत्रों की प्रमुख भाषा है। हिन्दी भाषा में अपार शक्ति है। हमने स्वतंत्रता की लड़ाई हिन्दी भाषा के माध्यम से लड़ी है। हिन्दी भाषा के माध्यम से कवि या लेखक केवल बोलता ही नहीं बल्कि वह लड़ता भी है।

भारत में रेडियो, टेलीविजन व सिनेमा की शुरूआत आजादी से काफी पहले हो चुकी थी। आदरणीय दादा गोविन्द धुंदीराज फालके ने सन् 1913 में पहली मूक फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' बनाई। इस फिल्म के साथ ही भारत में सिनेमा के एक नए युग का प्रारम्भ हुआ तत्पश्चात् भारत की पहली बोलती फिल्म 'आलमआरा' आई और इसके साथ ही भारतीय सिनेमा में हिन्दी भाषा के महत्त्व का नया युग शुरू हो गया। हालांकि रेडियो, टेलीविजन व सिनेमा से पहले भी भारत में सांग, नौटंकी, तमाशे, खेल इत्यादि मनोरंजक प्रभाएं रही हैं जिनमें हिन्दी भाषा का प्रयोग होता था। न केवल हिन्दी भाषा का प्रयोग इनमें होता था बल्कि अंग्रेजी भाषा के शब्दों का भी कुछ स्थानों पर प्रयोग हुआ। प्रसि) सांगी पं. दीपचन्द ने कहा है :-

भरती हो ले रै
थारे बाहर खड़े रंगरूट
इया मिता फट्या पुराणा
वहा मिलते फुल बूट
यहां मिलते सूखे टिकड़
वहा मिलते बिस्कूट।

उपरोक्त पंक्तियों में 'रंगरूट', 'फुल बूट', 'बिस्कूट', इत्यादि शब्द अंग्रेजी के हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि हमारी भाषा में अंग्रेजी के शब्दों का बहुतायत में प्रयोग हो रहा है जो हमारी भाषा के लिए घातक है। यह घातक नहीं है बल्कि हमारी भाषा के प्रचार-प्रसार की एक कड़ी है। भारत के अनेक लोग विदेशों में रहते हैं वहाँ वे बेशक अंग्रेजी बोलत हो लेकिन आपसी वार्तालाप हिन्दी भाषा में ही करते हैं।

भारत में जब रेडियो आया तो मात्र चुनिंदा स्टेशन की सुनते थे किन्तु समय के साथ-साथ इसका दायरा बढ़ता गया। राष्ट्रीय स्टेशन के साथ-साथ राज्य स्तर पर भी क्षेत्रीय भाषाओं के स्टेशन की शुरूआत हुई। इससे भाषा का महत्त्व ओर

ISBN: 978-81-954645-0-0

बढ़ा। एक समय था जब गाँवों व शहरों में टेलीविजन नहीं होते थे। गाँव में एक किसान खेती जोतते हुए गीत सुनरहा है, औरतें घर में काम करती हुई गीत सुन रही है, समाचार सुन रहे हैं। इसका सकारात्मक प्रभाव यह पड़ कि हमारे हरियाणवी लोग हिन्दी भाषा को समझने व बोलने लगे। एक हरियाणवी शुद्ध हिन्दी भाषा में गीत गा सकता है। अब रेडियों पर एफ. एम. का जमाना है। भारत के प्रत्येक बड़े शहर में एफ.एम. स्टेशन स्थापित हो चुके हैं। इन स्टेशनों पर जो उद्घोष है हिन्दी-अंग्रजी का मिला जुला प्रारूप प्रस्तुत करते है या हिन्दी को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करते है। कभी-कभी लगता है जैसे हिन्दी भाषा को ये मजाक बनाने पर तुले हैं। इन स्टेशनों की भीड़ का एक सकारात्मक प्रभाव यह जरूर है कि कुछ हिन्दी भाषी व अंग्रेजी भाषी उद्घोषकों को रोजगार प्राप्त हो रहे हैं। वैश्वीकरण के इस दौर में मैं मानता हूँ कि जो हमारे सरकारी रेडियों स्टेशन हैं वहां उद्घोषक मुख्यत: शुद्ध हिन्दी का प्रयोग करते हैं। रोहतक रेडियो स्टेशन पर पिछले कई वर्षो से उद्घोषक रामफल चहल द्वारा कही जा रही है। 'रामफल भाई की राम-राम' आज भी अत्याधिक प्रसिद्ध है। जबकि अगर कोई उद्घोषक गुड मार्निंग, हाय या हैलो बोलता है, उसमें वो मिठास नजर नहीं आती। पहले रेडियो पर अनेक हिन्दी कहानियाँ प्रसारित होती थी। किन्तु वैश्वीकरण के दौर में पहली बात तो लोगों के पास रेडियो सुनने का ही समय नहीं है तथा हिन्दी कहानी, चर्चा-परिचर्चा आदि तो अब दूर की बात है। इसके लिए रेडियों की भाषा के साथ-साथ आज का श्रोता भी उत्तरदायी है। अश्लील शब्दावली व द्विअर्थी संवादों का प्रयोग रेडियो पर होने लगा है जो हमारी संस्कृति के विपरीत है। पुराने समय में (सन् 80 व 90 के बीच) हमारे गाँव के लगभग प्रत्येक घर में रेडियो होता था किन्तु समय के बदलाव के साथ-साथ आज गाँव के चुनिंदा घरों में रेडियो रह गया है।

अब बात आती है सिनेमा जगत की पुराने दौर में फिल्मों में जो पटकथाएँ लिखी जाती थी उसमें अंग्रेजी भाषा का प्रयोग काफी कम होता था किन्तु समय के साथ-साथ फिल्मों की भाषा में भी परिवर्तन आता चला गया। पहले फिल्मों की पटकथा के साथ-साथ उन संवादों पर विशेष ध्यान दिया जाता था। यही कारण था कि उस समय की फिल्में, उनके संवाद, उनके गीत आज तक हिट है और हमेशा सदाबहार रहेंगे। वैश्वीकरण के दौर में एक विशेष बात यह है कि पटकथा लेखकों को वो सम्मान नहीं मिल पाया जिसके वे वास्तविक अधिकारी है। एक-एक फिल्म व गीत को लिखने में काफी समय लगता है। प्रसिद्ध फिल्म शोले को सब जानते है। वीरू, जय, बसन्ती, ठाकुर, गब्बर, सांभा व कालिया को सब जानते हैं किन्तु इसके फिल्म के पटकथा लेखक के बारे में किसी को शायद मालूम हो। प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता सलमान खान को सब जानते हैं। क्या इनके पिता को कोई जानता है? इनके पिता का नाम सलीम खां था। प्रसिद्ध शोले फिल्म की पटकथा इन्हीं सलीम खां ने लिखी है। सलमान खान को इतनी उम्र में दुनिया जानती है लेकिन उनके पिता जो एक प्रसिद्ध कथाकार है। उन्हें शायद साहित्य जगत के लोग भी न जानते हों। बिल्कुल ऐसा ही प्रसिद्ध गीतकार संतोष आनन्द जी के साथ है जिन्होंने उपकार, क्रान्ति, पूरब और पश्चिम, प्रेम-रोग, रोटी कपड़ा और मकान, राम तेरी गंगा मैली इत्यादि प्रसिद्ध फिल्मों के गीत लिखे। न केवल इन्होंने गीत लिखे बल्कि लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के अनेक गीतों की कच्ची धुनें भी तैयार की। आज लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, सोनू निगम, उदित नारायण आदि को सभी जानते है लेकिन संतोष आनन्द जैसे तपस्वी व सशक्त साहित्यकार को इतना सम्मान नहीं दिया जा रहा। इसका कारण भी प्रमुख वैश्वीकरण व बाजारवाद है जो प्रतिभा की अपेक्षा चकाचौंध को अधिक महत्त्व देता है।

प्रसिद्ध सिने अभिनेता कादर खां साहब वास्तव में हिन्दी अध्यापक व पटकथा लेखक व संवादकार है। ये गरीब बच्चों को हिन्दी पढ़ाते रहे एवं फिल्मों के संवाद लिखते रहे। लेकिन उन्हीं की जुबानी कि इससे उनका गुजारा नहीं होता था तब वे फिल्मों में कलाकार के तौर पर आए एवं आज उनकी पहचान कलाकार के तौर पर है न कि एक पटकथा या संवाद लेखक के रूप में। आज वहीं कादर खां दुबई में अरबी व फारसी के साथ हिन्दी पढ़ा रहे है। एक फिल्मी कलाकार विदेशों में हमारी भाषा के प्रचार प्रसार कर रहे है। ये हमारे लिए काबिले तारीफ है। बहुत सारी विदेशी नायिकाएं हिन्दी भाषा सीख कर फिल्मों में अपना नाम कमा रही हैं। कैटरीना कैफ व सेलीना जेटली के नाम इसमें प्रमुख हैं। बहुत सारी दक्षिण भारत की नायिकाएं हिन्दी फिल्मों की तरफ अपना रूख कर रही है। माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में तीन दिन का उपवास किया तब उन्होंने गुजराती भाषा की अपेक्षा हिन्दी भाषा में भाषण दिया। हिन्दी भाषा हमारी राज भाषा हैं सचिन तेंदुलकर ने राज्य सभा सांसद की शपथ भी हिन्दी में ली है।

आज बात आती है टी.वी. चैनल की। बहुत सारे टी.वी. चैनल आज हिन्दी-अंग्रजी को मिलाकर अपने कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। एक विशेष बात यह है कि इनके कार्यक्रमों में संगीत अधिक होता है जबकि संवाद कम होता है। क्या इससे भाषा का महत्त्व कम हो रहा है? इन चैनल पर जितने भी नाटक प्रसारित होते हैं उनकी भाषा साहित्यिक दृष्टि से कुछ अटपटी नजर आती है। हां, एक बात विशेष तौर पर देखी गई है कि इन टी.वी. चैनल के आने से हिन्दी में लिखने वालों की

जरूरत महसूस हो रही है। यमुनानगर, हिसार व सोनीपत से काफी संख्या में हिन्दी जगत से जुड़े लेखक इससे रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। इन 21वीं सदी को भूमण्डलीकरण की सदी कहे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी, इसकी सौ फीसदी अधिकारिणी हिन्दी भाषा है। अपने विशाल शब्द भण्डार, वैज्ञानिकता शब्दों और भावों को आत्मसात करने की प्रवृत्ति के साथ ज्ञान, विज्ञान एवं प्रौधोगिकी का भाषा के रूप में अपनी उपयुक्तता एवं विलक्षणता के कारण आज हिन्दी को विश्व में हिन्दी भाषा के रूप में सर्वत्र मान्यता मिल रही है। इस भाषा ने एक ओर कम्प्यूटर, तार, इलेक्ट्रॉनिक, टेलीप्रिंटर, टेलीविजन, रेडियो, अखबार, डॉक, फिल्म और विज्ञापन आदि के माध्यम से मीडिया व जनसंचार में क्रान्ति ला दी है।

निष्कर्ष रूप से यही कहना चाहूंगी कि इस वैश्वीकरण व बाजारवाद का प्रभाव हमारी हिन्दी पर पड़ा है किन्तु इससे भाषा के स्तर में बेशक गिरावट आई हो लेकिन हमारी भाषा का दायरा बढ़ा ही है। चाहे सिनेमा की बात हो, रेडियो की बात हो, टी.वी. की बात हो, सामाचार पत्र-पत्रिकाओं की बात हो, हर स्थान पर हिन्दी एक नए रूप में उभर कर सामने आई है। आज हिन्दी के कारण अपनी रोटी कमाने वाले अनेक कलाकार बेशक अंग्रेजी में साक्षात्कार देते हो, वार्तालाप करते हो लेकिन उनकी आत्मा कहीं-न-कहीं उन्हें यह संदेश देती होगी कि वास्तव में हमारी भाषा कौन सी थी जिससे उन्हें पहचान मिली है। अंत में यही कहना चांहूगी कि बजाए हम अपनी तारीफों का ढ़िढोरा पीटे, लेकिन वास्तविकता को पहचान कर एवं उनका निराकरण ढूँढ कर सही रास्ते पर चले तभी हम अपनी भाषा एवं साहित्य को आगे बढ़ा सकते हैं।

हिन्दी हमारी भाषा, हिन्दी हमारी जान।

हिन्दी है हिंद देश की, हिन्दी हमारी पहचान।

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची</u> :-

1. समाचार पत्र-पंजाब केसरी, दैनिक जागरण व दैनिक भास्कर।
2. हरियाणवी लोकधारा-सम्पादक डॉ. मीरा गौतम।
3. संचार माध्यम, लेखन, गौरीशंकर रेणा।
4. सम्प्रेषण एवं संचार साधन, मध्य प्रदेश हिन्दी अकादमी।
5. सम्प्रेषण - अवधारणा और स्वरूप, गुलाब कोठारी।
6. आकाशवाणी रोहतक।
7. एफ.एम. रेडियो करनाल।
8. टी.वी. पर प्रसारित कार्यक्रम।

ISBN: 978-81-954645-0-0